हेमकुंड साहिब

चर्चा में क्यों?

उत्तराखंड के **चमोली ज़िले** में स्थित सिखों का पवित्र तीर्थस्थल **हेमकुंड साहिब श्रद्धालुओं के लिये खोल दिया गया है, जिसके साथ ही वार्षिक तीर्थयात्रा का शुभारंभ हो गया है**।

मुख्य बिंदु

- **हेमकुंड साहिब के बारे में:**
  - हेमकुंड साहिब समुद्र तल से लगभग **4,329 मीटर (14,200 फीट)** की ऊँचाई पर स्थित है।
  - **यह हेमकुंड झील के तट पर, बर्फ से ढकी हिमालय की चोटियों से घिरा हुआ** है।
  - **हिमानी जल और अल्पाइन घास के मैदानों** से युक्त सुंदर परिदृश्य, शांतिपूर्ण और आध्यात्मिक वातावरण को और अधिक समृद्ध करता है।
  - **फूलों की घाटी से होते हुए जाने वाले** ट्रैकिंग मार्ग इसे एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल बनाते हैं।
  - **हेमकुंड झील से हेमगंगा** नामक एक छोटी धारा बहती है, जो क्षेत्र की पारिस्थितिकी समृद्धि में वृद्धि करती है।
- **आध्यात्मिक महत्त्व:**
  - हेमकुंड साहिब विश्व में सर्वाधिक पूजनीय सिख तीर्थस्थलों में से एक है।
  - गुरु ग्रंथ साहिब के अनुसार, **दसवें सिख गुरु, गुरु गोबिंद सिंह ने** अपने प्रारंभिक जीवन में **हेमकुंड झील पर गहन तप किया था।**
  - यह स्थल भक्तों के लिये **दिव्य प्रतिबिंब और पवित्रता का प्रतीक है।**

गुरु गोबिंद सिंह

- **प्रारंभिक जीवन**:
  - **22 दिसंबर 1666** को **बिहार के पटना** में जन्मे **गोबिंद राय सोढ़ी** सिख धर्म के **दसवें और अंतिम गुरु** थे।
  - **ये नौवें सिख गुरु, गुरु तेग बहादुर** के पुत्र थे।
- **गुरु पद ग्रहण:**
  - वर्ष 1675 में **अपने पिता की शहादत** के समय **सिर्फ नौ वर्ष** की आयु में उन्हें औपचारिक रूप से **गुरु पद** पर **आसीन** किया गया।
  - **उन्होंने आध्यात्मिक नेतृत्व को सैन्य अनुशासन** और **साहित्यिक अभिव्यक्ति** के साथ जोड़ा।
- **खालसा की स्थापना:**
  - **वर्ष 1699 में बैसाखी** के दिन, उन्होंने **खालसा पंथ की स्थापना की,** जो संत-सैनिकों का एक सैन्य और आध्यात्मिक संगठन था।
  - उन्होंने **पंच प्यारे** (पाँच प्रिय जन) को दीक्षा दी, **'खंडे दी पाहुल'** (अमृत संचार) की परंपरा शुरू की और **पाँच ककार** अनिवार्य **किया: कंघा** (कंघी), **केश** (बिना कटे बाल), **कड़ा** (स्टील कंगन), **कृपाण** (तलवार)और **कच्छा** (विशेष प्रकार का वस्त्र)।
  - उन्होंने अपना नाम गोबिंद राय से बदलकर **गोबिंद सिंह रख लिया।**
- **सैन्य संघर्ष और बलिदान:**
  - **मुगल सेनाओं और पहाड़ी राजाओं** के खिलाफ कई लड़ाइयाँ लड़ीं, जिनमें **भंगानी (1688), नादौन (1691)** और **मुक्तसर (1705) शामिल हैं।**
  - **मुगलों के अत्याचारों के कारण अपने चारों पुत्रों** और **माता गुजरी को खो दिया,** लेकिन उनका मनोबल अडिग रहा।
- **अंतिम दिन और विरासत:**
  - वर्ष 1708 में सरहिंद के नवाब वज़ीर खान द्वारा भेजे गए हत्यारों के माध्यम से **नांदेड़ में घातक रूप से घायल कर दिया गया।**
  - **7 अक्तूबर 1708** को अपनी मृत्यु से पहले, उन्होंने **गुरु ग्रंथ साहिब** को सिखों का **शाश्वत गुरु घोषित किया, जिससे व्यक्तिगत गुरुओं की परंपरा समाप्त हो गई।**

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/hemkund-sahib-1